अभिभावक की बात

नित्या गुरुमूर्ति

पूर्व केजी स्तर से ही आकलन वर्तमान स्कूल प्रणाली का अभिन्न हिस्सा बन गया है। 3 वर्षीय जुड़वाँ भाई-बहन की माँ होने के नाते, मुझे न चाहते हुए भी मजबूर होकर उन्हें इसमें अपना पराक्रम दिखाने का प्रयास करने के लिए बाध्य करना पड़ता है। क्योंकि उन्हें स्कूल में पहले महीने से ही आकलन झेलना पड़ रहा है। शिक्षकों द्व ारा बच्चों के सुधार के लिए लगातार की जाने वाली तुलनाओं और सुझावों के चलते माता-पिता अपने बच्चों पर दबाव डालने के लिए मजबूर हो जाते हैं, भले ही ऐसा करने का उनका इरादा न हो। मेरे ऐसे दोस्त हैं जिन्होंने अपने बच्चों को स्कूल के बाद अतिरिक्त कक्षाओं में भेजा ताकि कहानी सुनाने, चित्रकला इत्यादि में उनके कौशलों में निखार लाया जा सके। मेरे हिसाब से यह इतनी छोटी उम्र में पूरी तरह से गैर-जरूरी था। वास्तव में हम उन पर इस अनावश्यक तनाव और बोझ को डालकर उनकी जिज्ञासा और मासूमियत को नष्ट कर देते हैं।

स्कूल में, बच्चों से उस उम्र में अँग्रेजी में बात करने की अपेक्षा की जाती है, जब वे अपनी मातृभाषा तक बहुत अच्छे से नहीं बोल पाते! वे बच्चे जो बहुत शैतानियाँ करते हैं या वे जो अत्यन्त चंचल होते हैं, उन्हें इसलिए एक तरफ कर दिया जाता है क्योंकि शिक्षक उनका ध्यान खींचने में नाकाम रहते हैं। स्कूल में उनका आकलन बस उपद्रवी और खराब प्रदर्शन करने वालों के रूप में कर दिया जाता है!

जहाँ मेरी बेटी को चित्र बनाना और रंग भरना बहुत पसन्द है वहीं मेरे बेटे की रुचियाँ थोड़ी अलग हैं। उसे मैदानी गतिविधियाँ ज्यादा पसन्द हैं। लेकिन, स्कूल में, कई अन्य क्षेत्रों के अलावा, इन दोनों क्षेत्रों में भी प्रदर्शन के एक निश्चित स्तर (जो मेरे हिसाब से बहुत ज्यादा है) की अपेक्षा की जाती है। स्कूल का ध्यान हमेशा उन कौशलों पर रहता है जिनमें बच्चा, या तो रुचि न होने के कारण या अन्य कई कारणों से, अच्छा नहीं करता। इस बात पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय कि प्रत्येक बच्चे को क्या करना अच्छा लगता है, उन कौशलों को विकसित करने पर अतिरिक्त ध्यान दिया जाता है जिनमें वे कोई बहुत रुचि नहीं रखते, जिससे धीरे-धीरे उनमें स्कूली शिक्षा के प्रति ही एक घृणा का भाव विकसित हो जाता है।

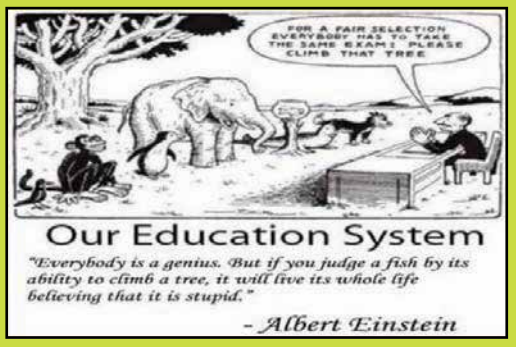

मैं इस बात को स्वीकार करती हूँ कि जब मैं स्कूल जाती थी उस वक्त की अपेक्षा स्कूलों में निश्चित रूप से बहुत अधिक सुधार हुआ है और शिक्षक अब कहीं अधिक संवेदनशील व बच्चों की विकासात्मक जरूरतों के प्रति जागरूक हैं, लेकिन अभी भी स्कूलों में शिक्षण और मूल्यांकन प्रणालियों के वास्तव में उतना प्रगतिवादी बनने के लिए, जितना कि शिक्षा और स्कूलों के कुछ नवीनतम सिद्धान्त सुझाते हैं, बहुत काम बाकी है।

नित्या गुरुमूर्ति *गृहिणी हैं। उनके जुड़वाँ बच्चे गुरुप्रिया और कुमारगुरु हैं जो चेन्नई के एक नामचीन स्कूल में प्री-केजी में पढ़ रहे हैं।*
अनुवाद *: भरत त्रिपाठी*